

Vol 3 Issue 4 Oct 2013

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research
Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, IasiMore
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net



सारांश

अलका सरावगी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखिका हैं। अलका जब साहित्य रचना की सैर पर निकलती हैं तो अपने साथ जनमानस की समग्र चेतना लेकर चलती हैं। अलका सरावगी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखिका हैं। अलका जब साहित्य रचना की सैर पर निकलती हैं तो अपने साथ जनमानस की समग्र चेतना लेकर चलती हैं।

जीवन परिचय :- अलका सरावगी का जन्म नवंबर १९६० में कोलकता में हुआ। अलका जी के पिता राजस्थानी मारवाड़ी थे। उनका नाम केशव प्रसाद था, इनकी शुद्ध हिन्दी भाषा पर अच्छी पकड़ थी। माँ 'ताई शकुंतला देवी' पहले से ही कविताएं पढ़ने की शौकीन थी। अलका सरावगी बचपन से ही तीव्र बुद्धि की पढ़ाकू थी। कक्षा एक से लेकर बी.ए. तक की पढ़ाई में वे हमेशा सर्वप्रथम स्थान पर आती रहीं। कोलकता के लॉरेटो कॉलेज से उन्होंने बी.ए. तक की पढ़ाई की। इसके बाद सन् १९८० में शादी हुई इस कारणवश आठ साल बाद सन् १९८८ के बैच में 'कोलकता विश्वविद्यालय' में एम.ए. में दाखिला लिया और १९९० में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान से एम.ए. पास किया। एम.ए. के बाद एम.फिल किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की छात्रवृत्ति मिली सन् १९९६ में अलका सरावगी ने कोलकता विश्वविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापक, आलोचक डॉ. शंभुनाथ जी के निर्देशन में 'रघुवीर सहाय' पर शोधकार्य किया और पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की। इस प्रकार अलका जी की शिक्षा पूरी हुई।

प्रस्तावना :

अलका जी के सभी भाई-बहनों में सिर्फ अलका ही हैं जिन्होंने विवाह के बाद, घर-संसार सम्भालते हुए उच्चशिक्षा के लिए विश्वविद्यालय तक गई और साहित्य जगत में वह कर दिखाया जो आज तक उनके परिवार में कभी किसी ने नहीं किया था।

अलका सरावगी राजस्थान के मारवाड़ी परिवार से संबंध रखती हैं। इनके पूर्वज पाँच पीढ़ी पहले कोलकता में आकर बस गए थे। इनके ससुराल के लोग मूलतः राजस्थानी मारवाड़ी हैं, लेकिन ये लोग बांग्लादेश से होते हुए कलकत्ता में आकर बस गए थे।

सरावगी परिवार एक आदर्श संयुक्त परिवार है, जिसमें सास-ससुर, दो देवर, दो देवरानियाँ, उनके बच्चे, अलका जी के पति, महेश सरावगी और उनके दो बच्चे, अट्ठाईस वर्षीय 'मयंक' और चौबीस वर्षीय बेटी 'सलोनी' हैं। अलका जी की सफलता के पीछे उनकी सास और उनके पति की अहम भूमिका है। उनकी दोनों देवरानियों ने घर की सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर यहाँ तक की अलका के दोनों बच्चों की देखभाल करके उन्हें कामयाबी के शिखर पर पहुँचाने में अपना सहयोग दिया। अलका जी की सास 'सीतादेवी' उन्हें पढ़ने से कभी मना नहीं करती। बल्कि हमेशा इसकी कद्र करती अलका की पढ़ाई में रुचि देख, सास चाहती थी कि अलका पढ़े जो काम उन्होंने कभी नहीं किया था, उनके लड़के नहीं कर सकते थे वह काम उनकी बड़ी बहू करे। इसलिए उन्होंने अलका को अध्ययन-लेखन के लिए स्वतंत्र कर दिया।

पुरस्कार एवं सम्मान :-

अलका सरावगी २५ साल की उम्र में 'नवभारत टाइम्स' के आठवाँ कॉलम में पत्रकारिता से जुड़ी छिटपुट रचनाएँ लिखकर भेजती थी। लेकिन २९ वर्ष की आयु में आपने पहली कहानी 'आपकी हँसी' लिखी। इसके बाद १९९८ में पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ, 'कलि-कथा : बाया बाइपास' इसे सन् १९९८ में ही 'श्रीकांत वर्मा पुरस्कार' और वर्ष २००१ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुई। दूसरा उपन्यास 'शेष कादम्बरी' २००१ में प्रकाशित हुआ इसे भी लोगों ने खूब सराहा। अलका को इस उपन्यास के लिए के.के. बिरला फाउंडेशन के बिहारी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अलका सरावगी को पुरस्कारों के साथ-साथ बहुत से आलोचकों, लेखकों की प्रशंसा और सम्मान मिला। अंग्रेजी के जाने-माने आलोचक 'हरीश त्रिवेदी' ने अलका जी की 'सलमान रुश्दी' उपन्यासकार से तुलना की।

'नामवर सिंह' जी ने 'पल प्रतिपल' के लम्बे इंटरव्यू में कहा, 'स्थापत्य' म्यूजिसौ साल बाद बदलता है, अलका ने उपन्यास का स्थापत्य बदल दिया है।'

परमानंद श्रीवास्तव जी अलका सरावगी की तारीफ में कहते हैं, 'समकालीन लेखक से रचनाप्रक्रिया को लेकर किये गए तर्क-वितर्क में मैंने इतना कुछ अंधेरे में चमक जैसा नहीं हासिल किया है, जितना 'सेलिब्रिटी' हो चुकी अलका से।' १

ग्राबिएल गार्सिया मार्क्वेस और मिलान कुन्देरा अपने कथन में अलका जी के उपन्यास 'कोई बात नहीं' को बहुध्वन्यात्मक इदल्बन्दहम् कहा है।

विजय बहादुर सिंह अपनी आलोचना में कहते हैं, "अलका की स्मृतियाँ बहुत पावरफुल और इतिहास-बोध बेहद उत्तेजनकारी और आक्रामक हैं वे जितनी बड़ी लेखिका के रूप में उभरने की कोशिश में है, उसका रहस्य इन्हीं स्मृतियों, इतिहास और उसकी नैतिक तार्किकता में है।"

इस प्रकार अपनी बुद्धि, शब्द संपन्नता, खोजी वृत्ति के कारण, कम समय में बहुत सारे पुरस्कार सम्मान की हकदार अलका सरावगी है।

जीवन के अन्य पक्ष :-

अलका सरावगी स्वभाव से बहुत धीर-गंभीर, शांतिप्रिय, मृदुभाषी और अच्छी इन्सान है। पढ़ने की रुचि तो बचपन से है। कक्षा आठवीं में ही उन्होंने प्रेमचंद के आठ खंडों का कहानी संग्रह 'मानसरोवर' पूरा पढ़ डाला था। पिता केशव प्रसाद की शुद्ध हिन्दी भाषा पर अच्छी पकड़ थी। माता-पिता की अध्ययन के प्रति रुचि ने अलका को भी अध्ययनशील बनाया। माँ तारु शकुंतला देवी पहले से ही कविताएँ पढ़ने की शौकीन थी। उन्हीं की प्रेरणा से अलका ने मैथिलीशरण गुप्त और जयशंकर प्रसाद की कविताएँ पढ़ी। उनकी दादी कमला हमेशा अपनी पोती को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती।

अलका जी से मेरी फोन पर बातें हुई उनकी बातों में इतनी आत्मीयता है जो उनके मिलनसार स्वभाव की ओर संकेत करती हैं। इनकी रचनाओं को पढ़कर लगता है, वे हमेशा व्यस्त रहने एवं कठोर परिश्रम करने में विश्वास रखती हैं। आधुनिक जीवनशैली के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती प्रगतिशील अलकाजी स्वभाव से थोड़ी भुलकड़ है। वह स्वयं स्वीकारती है कि कई बार तो अपने पास घर मिलने आए भाई को खाना पूछना भी भूल जाती है।

फोन पर बातें करते वक्त मैंने कहा, "अपने स्वभाव के विषय में बताइए ? तो उन्होंने कहा, "स्वभाव के विषय में तो यही कहना चाहूँगी कि बचपन से ही पढ़ने-लिखने की रुचि थी। पढ़ने की आदत को मैंने कभी नहीं छोड़ा।"

अलका सरावगी स्वभाव से भावुक, मददगार है वह कभी भी 'स्व' से 'पर' की सोचती है। जो परमानंद श्रीवास्तव अपने एक वक्तव्य में बताते हैं, "याद आता है कि इसी गोमती के कमरा नंबर एक में जब अलका को उसी शाम 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिलनेवाला था, अलका ने प्लाइट से अकादमी को रिपोर्ट करने के तुरंत बाद अपनी सहेली ज्योति गुप्ता के माध्यम से पॉश एरिया से डॉक्टर बुलाकर मेरी जान बचायी थी। उन्हें खुद अगले दिन आत्मवक्तव्य पढ़कर कलकत्ता लौट जाना था, पर भूल नहीं सकता कि किस तरह अलका और ज्योति ने मेरा सामान समेटा और एक मित्र के साथ बसंत बिहार इनक्लेव भेज दिया शायद मेरे शरीर में पानी और नमक कम हुआ था 'क्षय' के कारण।"

प्रतिभा संपन्न लेखिका :-

अलका सरावगी को बचपन से ही पढ़ने-लिखने में रुचि है। उनके लेखन की शुरुआत स्कूल की पत्रिकाओं में छोटे-छोटे लेख लिखने से हुई। मैंने उनसे पूछा, "आपने किस आयु से लेखन कार्य आरंभ किया ? जवाब में उन्होंने कहा, "मैं २५ साल की उम्र में 'नवभारत टाइम्स' के आठवाँ कॉलम में पत्रकारिता से जुड़ी छिटपुट रचनाएँ लिखकर भेजती थी

लेकिन २९ वर्ष की आयु में मैंने अपनी पहली कहानी 'आपकी हँसी' लिखी। इसके बाद साल में पाँच-छह कहानियाँ लिख लेती थी। फिर तो लिखने का अनवरत सिलसिला चल पड़ा।"

सरावगी अपने पहले उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाइपास' के प्रकाशित होते ही, प्रतिभा संपन्न लेखिका बनी। उनकी लेखनी को बहुत ही सराहा गया। सिर्फ एक उपन्यास से हिन्दी के महत्वपूर्ण उपन्यासकारों में उनकी गिनती होने लगी। अपने पहले उपन्यास में ही उन्होंने एक नई शैली को जन्म दिया जिसे लोगों ने पसंद किया, आत्मसात किया।

प्रो. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' अलका सरावगी अपने पहले उपन्यास में ही प्रयोगधर्मी वैविध्य के कारण प्रतिभा संपन्न लेखिका बनी बताते हैं, "कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास की ग्राह्यता प्रभावपरकता और महानता के केन्द्र में सर्वत्र प्रयोग की विद्यमानता है। यह बड़ी बात है कि अपनी बहुआयामी प्रयोगधर्मिता के बावजूद लेखिका कहीं भी चमत्कार के प्रलोभन से ग्रस्त नहीं हुई है और अपनी समकालीन सामाजिकता, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को समीचीनता में संदर्भित कर सकी हैं। उपन्यास में आद्यन्त कथा रस बना रहता है। लेखिका पारिवारिक इतिहास को बताती हुई। पारिवारिक स्मृतियों से कब प्रस्थान कर समाजगत और देशगत धरातल पर चली जाती हैं यह पाठक को सहसा पता नहीं चल पाता है। जैसे वर्ड्सवर्थ की 'टिनटर्न एबी' कविता कब आत्मनिष्ठ से वस्तुनिष्ठ हो जाती है यह पता नहीं चल पाता है वैसे ही कुछ 'कलि-कथा : वाया बाइपास' के साथ भी होता है।"

आम धारणा यह है कि महिलाओं का विश्व केवल परिवार होता है। महिला लेखिका के लेखन का विषय 'परिवार, प्रेम, स्त्री विमर्श, नारी मुक्ति, आक्रोश, स्त्री पुरुष मानसिकता यही होता है। इस धारणा को अलका जी ने अपनी रचनाओं द्वारा गलत सिद्ध किया है। अलका जी एक अधिकार से लिखती हैं। सभी विषयों पर बेबाक टिप्पणी करती हैं। इसलिए आज अलकाजी एक प्रतिभा संपन्न लेखिका के मुकाम पर पहुँची जहाँ हिन्दी साहित्य में उनका स्थान स्थिर है।

अलका सरावगी की कृतियाँ संख्या में कम हैं लेकिन वे लेखन के गुणवत्ता में विश्वास रखती हैं ना कि कृतियों की संख्या में। इसलिए वे प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं। अलकाजी हिन्दी के उन कथाकारों, उपन्यासकारों में नहीं हैं, जो साहित्य में बने रहने के लिए लेखनी परंपरा को ढोने का काम करते हैं, बल्कि उन लेखक-लेखिकाओं में से एक हैं, जो परंपरा में नया बदलाव लाते हैं, अनूठा, विचारणीय लेखन लाते हैं।

'अलका सरावगी' एक ऐसी शख्सियत का नाम है जिसने हिन्दी साहित्य जगत में थोड़े लेखन से ही अपनी एक खास जगह बना ली है। इनकी कलम में वह जादू है जो शायद ही किसी और की कलम में हो। यह 'कलम दिवानी' साहित्य जगत को ऐसी-ऐसी अनमोल निधियाँ दे रही है, जिनको सहेजकर हिन्दी साहित्य जगत हमेशा जगमगाता रहेगा। अलकाजी की रचनाएँ गिनी-चुनी हैं, फिर भी उनकी गिनती उन विशिष्ट उपन्यासकार-कथाकार, लेखिकाओं में होती है जिन्होंने थोड़े समय में ही आसमान की ऊँचाइयों को छू लिया है।

अंततः अलका सरावगी ने अल्प अवधि में ही अपने आपको उच्च आसन पर स्थापित कर लिया है। यह लेखिका के बहुआयामी व्यक्तित्व के फलस्वरूप ही संभव हुआ है। इसलिए पाठक इनके तेजस्वी लेखकीय व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट हुए हैं। इस दृष्टि से अलका सरावगी की कृतियों पर दृष्टि डालें तो उनका समस्त साहित्य समाज की प्रगति, समृद्धि और स्वस्थ विकास की ओर अग्रसर है। इसलिए अलका सरावगी, एक प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं।

ग्रंथ सुची:

1. कहानी की तलाश में अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1996
2. दूसरी कहानी— अलका सरावगी, आधार प्रकाशन नई दिल्ली 2000
3. कलि कथा: वाया बाइपास — अलका सरावगी आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा 1998
4. शेष कादम्बरी — अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2001
5. कोई बात नहीं — अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1996

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net